**SANSKRIT-SHAASTRA BASED EVALUATION OF MODI's GOVERNANCE (Part 4, 'Mahaabhaarat')**

UNDER THE VEDAVYAASA RESTRUCTURING SANSKRIT SCHEME

Department of Sanskrit & S D Human Development Research & Training Centre,

Sanatan Dharma College,

Ambala Cantt. 133001 (Haryana)

This exercise is purely for academic purpose and to make Sanskrit-Shaastras useful, relevant and to design models, policies etc. Your information will not be shared with anyone. Hence, we are asking your email only. Regards Ashutosh Angiras Dr Piyush Aggarwal Dr. Gaurav Sharma

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।

नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥ (अश्वपति आख्यान, छान्दोग्योपनिषद्)

मेरे जनपद में – न तो कोई चोर है, न कुत्सित व्यवहार करने वाला है, न मद्यपायी है, न कोई ऐसा गृहस्थी है जिसके अग्नि स्थापित न हो, कोई अविद्वान् नहीं है , न स्वेच्छाचारी पुरुष है तो स्वेच्छाचार करने वाली स्त्री कहाँ होगी।

सामर्थ्य्मूलं स्वातन्त्र्यं , श्रममूलं च वैभवम् । न्यायमूलं सुराज्यं स्यात् , संघमूलं महाबलम् ॥ अर्थात् शक्ति स्वतन्त्रता का मूल है, मेहनत धन-दौलत का मूल है, न्याय सुराज्य का मूल होता है और संगठन महाशक्ति का आधार है ।

निश्चित ही राज्य तीन शक्तियों के अधीन है । शक्तियाँ मंत्र, प्रभाव और उत्साह हैं जो एक दूसरे से लाभान्वित होकर कर्तव्यों के क्षेत्र में प्रगति करती हैं। मंत्र (योजना, परामर्श) से कार्य का ठीक निर्धारण होता है, प्रभाव (राजोचित शक्ति, तेज) से कार्य का आरम्भ होता है और उत्साह (उद्यम) से कार्य सिद्ध होता है । दशकुमारचरित

In the happiness of his subjects lies the king’s happiness; in their welfare his welfare. He shall not consider as good only that which pleases him but treat as beneficial to him whatever pleases his subjects. (1.19.34 Kautilya – The Arthashastra – Penguin Classics p.x.)

